।। घमंडी रामजी रा शिष रो संमाद ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

।।अथ घमंडी रामजी रा शिष रो संमाद लिखंते ।।

।। अरेल ।।

संत सुखरामजी ने घमंडी रामजी रे शिष बूजियो
थॉरे नाच किण रीत व्हे छे राम नाच तो सुणियो
नही भूत नाचे तब संत सुखरामजी बोलिया ।।
तम साचा नाचे भूत । पाँच तत्त मांय रे ।
अे निरत करे काज । राम गुण गाय रे ।
सुण सुरत पवन संग मन ।। नाँभ मे खोय हे ।।
हर हाँ सुणज्यो के सुखराम ।। नाच यूँ होय हे ।। १ ।।

घमंडी रामजी का गाँव चूंटेसरा। घमंडी रामजी ये संत दासोत साधू थे। सतगुरू सुखरामजी महाराज से घमंडी रामजी के शिष्य ने पूछा की तुम्हारा नाच किस प्रकार से होता है। मैंने तो राम का नाच सुना नही। भूत नाचता है ऐसा मैंने सुना है,परन्तु राम नाचता है यह मैने नही सुना। तब आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले,तुम सत्य कह रहे हो। भूत ही नाचते रहता है। ये पाँच भूत,शरीर में पाँच तत्व है,वही नाचते। ये हर को मिलने के लिए नाँच करते है और राम नामके गुण गाते है । सूरत,श्वाँस और इनके साथ ये मन नाभी के बीच आता है तब खोय( ),तब नाच होता है यह सुन लो। ।।१।।

नाँव रटे सुण जोर ।। प्रीत लागे अत भारी ।। ब्रेहे ब्याकूळ मन जीव ।।
सुध बिसरे जुग सारी ।। रटत रटत सो नॉभ मे ।। सेग पेग मन जाय ।।
हर हाँ तब नाचे सुखराम के ।। पाँच भूत तन मांय ।। २ ।।

इस राम नामकी जोर से रटन करते है और नाम से,बहुत ही भारी प्रिती लगती है विरह आकर मन और जीव व्याकुल हो जाता है । संसार की सभी सुध भूलकर बेसुध हो जाता है । रटन करते-करते वह मन नाभी में शब्द के साथ एक्मेक हो जाता है तब ये पाँचो भूत,शरीर में नाचने लगते है । ।।२।।

रटे नाँव निरधार ।। संपीड़ो केत हे ।। आ करक कळेजा मांय ।।
रात दिन रेत हे ।। सुण पड़े शबद की लेहेर ।। नाँभ मे जोय रे ।।
हर हाँ सुण ज्यो के सुखराम ।। नाच यूँ होय रे ।। ३ ।।

निर्धार करके राम नामकी रटन करते है और पिड़ीत होकर राम नामका भजन करता और कलेजे में रामजी पानेको घाव लगा हुआ रात-दिन दु:खी रहता है । सुनो इस दु:ख में शब्द के लहरे नाभी में पड़ती है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि सुनो जब शब्द का लहरे नाभी में पड़ती है तब नाच होता है । ।।३।।

सुरत निरत मन बंध ।। भजन सो करत हे ।। अे सास उसासाँ शबद ।।
नाँभ मे धरत हे ।। तब होय ऊमाऊँ माँय ।। कसर नहिं कोय रे ।।

हर हाँ सुण ज्यो के सुखराम ।। नाच युँ होय रे ।। ४ ।।

सुरत और निरत के बीच मन बँधकर भजन करता है और श्वाँसो-श्वाँस में शब्द को नाभी में रखता है जिससे यह श्वाँस पेट में अमाऊ भर जाता है । श्वाँस अन्दर भरने में कोई कसर नही रहती है । इस प्रकार से जब होता है तब नाच होता है यह सुनो । ।।४।।

पडे सबद की धूस ।। नॉभ मे आयरे ।। ज्यांहाँ मन पवना के राड़ ।।
नाच युँ थाय रे ।। अे धसग्या पांचुँ मांय ।। भो मियाँ जोत हे ।।
हर हाँ सुणज्यो के सुखराम ।। नाच युँ होत हे ।। ५ ।।

नाभी में शब्द की जोर से चोट याने धमाका आकर पड़ती है और वहाँ नाभी में मन की और श्वाँस की कुश्ती होती है तब ऐसा नाच होता है । ये पाँचो नाभी में धँस गये । और ये अपनी-अपनी जमीन जोतने लगते है इस प्रकार से नाच होता है । ।। ५ ।।

अे करे भजन मन धाव ।। जुगत सब छाड के ।। ब्रेहे ब्याकुळ होय केत ।।
कसर सब काड के ।। रे तब उमंगे मन सबद ।। जोस सूं ऊतरे ।।
हर हाँ सुणज्यो के सुखराम ।। नाच यूँ होत रे ।। ६ ।।

ये दूसरी सभी युक्तीयाँ छोड़कर मन को रोककर भजन करते है और विरह से व्याकुल होकर बोलते है और अपने अन्दर रही हुयी सारी कसर निकाल देते है तब मन और शब्द उल्हास से और जोर से आकर उतरते है इस प्रकार से नाच होता है । ।। ६ ।।

रसणा षट रस साव ।। कंठ अड नीसरे ।। आहि बिरह की झाळ ।।
सुध सब बीसरे ।। रे नाँभ कंवळ में नाच ।। पिछम में बंध रे ।।
हर हाँ ध्यान लगे सुखराम ।। त्रिगुटी संध रे ।। ७ ।।

रसना से छः रसों का स्वाद कंठ में रूककर निकलता है और विरह की झळ लगती है,सभी सुध भुलकर बेसुध हो जाता है तब नाभी कमल में नाच होता है और पश्चिम के बंध और त्रिगुटी के जोड़ पर ध्यान लगता है । ।। ७ ।।

तरा फेर बोलिया ।। म्हे तीन च्यार संत दीठा ज्यारे नाच हुवो नही ।।
तब संत सुखराम जी बोलीया ।। अरेल ।।

सुण तां के शब्द असोस ।। जोस सुध संतहे । रे जाके व्हे सुण नाच । बिरेह मेहेमंत हे ।।
देह पिछम दिश बंध । करारो आण रे ।। हर हाँ भारी सो सुखराम । शबद ओ जाणरे ।८।

तब घमंडी रामजी का शिष्य पुनः बोला कि मैने तीन-चार संत देखे उन संतो का नाच हुआ नही तब आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले,कि अरे सुन जीन संतो का शब्द असोस याने असहनीय है और उन संतो मे जोश है और संत शुद्ध याने निर्मल संत है उन संतो का नाच होता है । जो संत विरह में मदोन्मत्त मस्त है । उनका नाच होते रहता है और उनके पश्चिम याने बंकनाल के रास्ते में,कड़क बंध लगता । ऐसे संत का शब्द भारी याने असहनीय होता है ऐसा समझो । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।८।

बेहे सिलता सुण पूर ।। पड़ी वा जात हे ।। रे पाड़े सब बन राय ।।
उछाळा खात हे ।। यु सुण वाँ की रीत ।। सबद की ठाणिये ।।
हर हाँ नाच हुँवा सुखराम ।। इधक तत्त जाणिये ।। ९ ।।

जैसे नदी में बाढ़ आने पर नदी जोर से बहती है और वह नदी भारी बहती जाती है । वह बाढ़ आयी हुयी नदी सभी बन राय पेड़–पौधे सब गिराकर बहाते जाती है और झकोलो खाते हुए, नदी का पानी बहता है वैसे ही शब्द की रीती जाणो,वह शब्द उनके अन्दर नदी के पानी जैसा उफान मारता है तब नाच होता रहता है। जिस संत का नाच होता है,उनमें अन्य संतोसे उंचा तत्त है ऐसा समझो । ।। ९ ।।

कॉपे हे सब डील ।। नाँभ मे आवियाँ ।। रे नाच हुवो सो इधक ।।
राम गुण गावियाँ ।। रे सुण सीया की बात ।। अेक ही थाय रे ।।
हरहाँ सुण इधक सुखराम ।। उछाळा खाय रे ।। १० ।।

उस संतो का शब्द नाभी में आया यानी उनका सारा शरीर कापने लगता है । उनका नाच अधिक होता है । वह नाच राम नामके गुण–गान से होता है । जैसे ठंढी का बुखार आता है, शरीर में ठंड आयी यानी शरीर कांपता है वैसे ही शब्द की रीत और बुखार की रीत,दोनों की एक सरीखी बात है इसीतरह से समजो । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले की जब ये शब्द भी उफान खाता है तब नाच होता है । ।। १० ।।

।। इति घमंडी रामजी रा शिष को संमाद संपूरण ।।